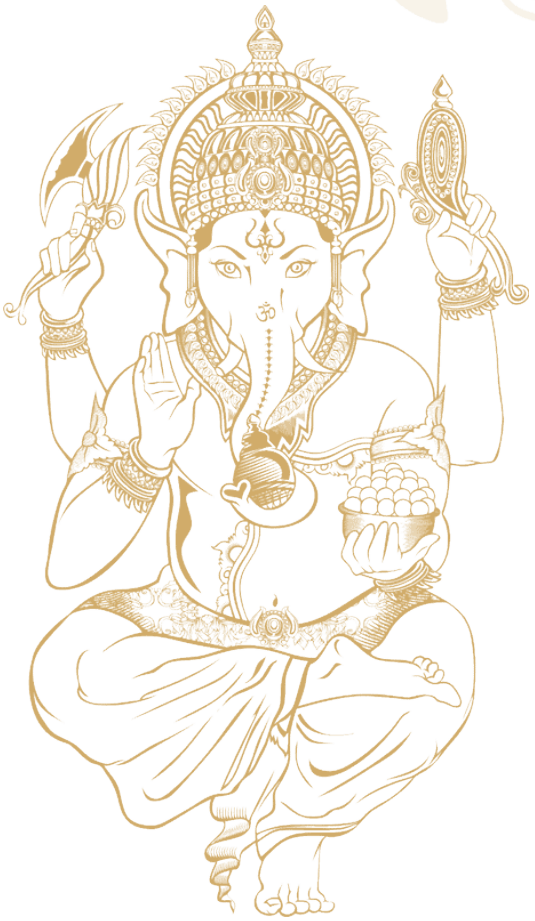

Mr. Nitin Dogra

24 Feb 1990

06:25 AM

Meerut

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120696401**

तिथि 24/02/1990 **समय** 06:25:00 **वार** शनिवार **स्थान** Meerut **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:23
अक्षांश 29:01:00 उत्तर **रेखांश** 77:45:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:00 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	16:20:35 घं
वेलान्तर	00:13:19 घं
सूर्योदय	06:51:09 घं
सूर्यास्त	18:14:04 घं
चैत्रादि संवत	2046
शक संवत	1911
मास	फाल्गुन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	परिघ
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	गा-गगन
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

मंगल 6वर्ष 6मा 12दि

गुरु

07/09/2014
07/09/2030

गुरु	25/10/2016
शनि	08/05/2019
बुध	13/08/2021
केतु	20/07/2022
शुक्र	20/03/2025
सूर्य	06/01/2026
चन्द्र	08/05/2027
मंगल	13/04/2028
राहु	07/09/2030

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 10मा 12दि

मंगला

06/01/2025
06/01/2026

मंगला	16/01/2025
पिंगला	05/02/2025
धान्या	08/03/2025
भ्रामरी	17/04/2025
भद्रिका	07/06/2025
उल्का	07/08/2025
सिद्धा	17/10/2025
संकटा	06/01/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:47:35	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	---	0:00			
सूर्य			11:25:41	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.47	पुत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			24:13:15	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	सम राशि	1.42	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			24:46:14	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.49	अमात्य	भ्रातृ	वध
बुध			23:46:50	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	सम राशि	1.02	मातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		07:05:09	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.05	ज्ञाति	धन	सम्पत
शुक्र			01:36:06	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	मित्र राशि	1.30	कलत्र	कलत्र	मित्र
शनि			27:55:35	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.19	आत्मा	आयु	मित्र
राहु	व		22:45:46	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		22:45:46	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

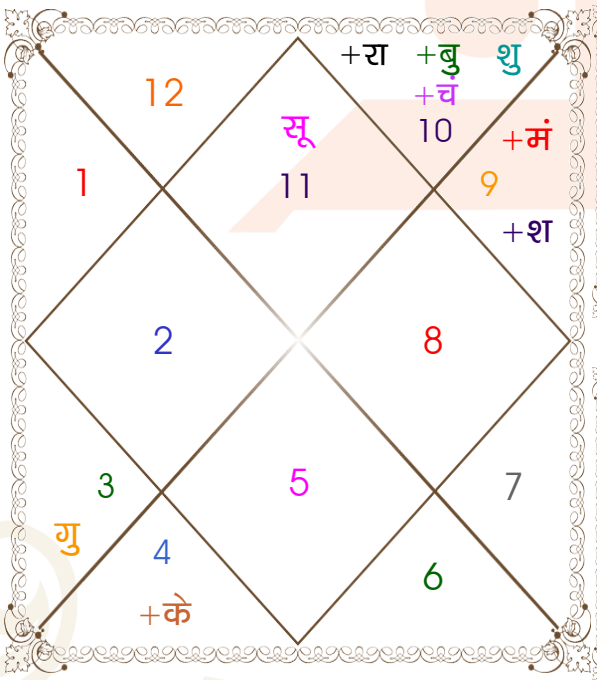

चन्द्र कुंडली

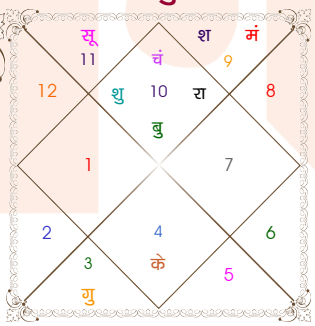

नवमांश कुंडली

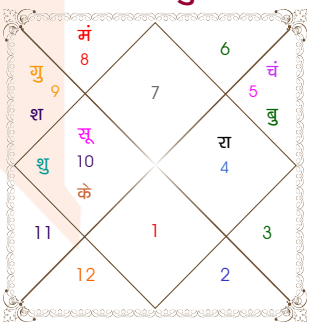

सर्वाष्टकवर्ग

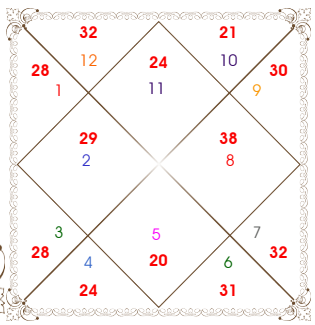

दशमांश कुंडली

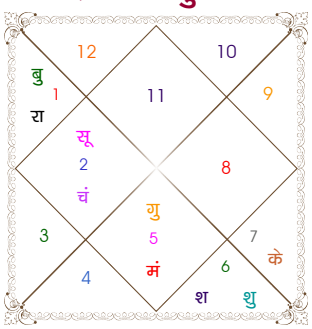

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार, योनि सिंह, नाड़ी मध्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ग" या "गा" अक्षर से होगा। यथा- गजेन्द्र, गणेश।

आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा आपका चरित्र निर्मल रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। समाज में अन्य जनों से आपका लौकिक व्यवहार मधुर तथा चतुराई से युक्त रहेगा। अतः सभी लोग आपके इस सद्व्यवहार से प्रभावित रहेंगे तथा आपकी बातों से भी सहमत रहेंगे। धन धान्य से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे तथा धनवान व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा शरीर में बल की प्रधानता रहेगी। आप एक दयालु पुरूष भी होंगे तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों पर नित्य अपनी कृपा दृष्टि रखेंगे। इससे आप को समाज में सम्मान तथा ख्याति दोनों की प्राप्ति होगी। साथ ही आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे एवं चारों तरफ आपका प्रभाव विद्यमान रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप जीवन में कभी भी निराशा की अनुभूति नही करेंगे अपितु हमेशा आशान्वित रहेंगे। अतः मानसिक कष्ट आप अल्प मात्रा में ही प्राप्त करेंगे। आप जीवन में सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से सम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

गान विद्या एवं संगीत शास्त्र के प्रति आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं इस क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करके ख्याति भी अर्जित करेंगे। समस्त परिवारिक जन तथा बन्धुवर्ग में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के कीमती आभूषणों से भी आप सुशोभित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कई लोगों के मध्य श्रेष्ठ या उच्चाधिकारी भी हो सकेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

दानशीलता की प्रवृति भी स्वाभाविक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा समाज में अन्य जनों के समक्ष आप नित्य अपनी इस प्रवृति का प्रयत्नपूर्वक अनुपालन भी करते रहेंगे। आप एक वीर पुरूष होंगे तथा निर्भयता एवं साहस पूर्वक अपनी समस्याओं का सामना करके उसका समाधान भी करेंगे। इसके अतिरिक्त धन के प्रति भी आपके मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आप ऊँचे कद के पुरूष होंगे तथा आपका मस्तक भी विस्तृत होगा। आपकी आखें सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करेंगे। ठंड से आपको व्याकुलता का आभास होगा तथा इसे सहन करने में प्रायः आप असमर्थता महसूस करेंगे। सत्य के प्रति आप के हृदय में पूर्ण निष्ठा भाव रहेगा तथा इसका जीवन में अनुपालन करने के लिए आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप बाह्य प्रदर्शन के लिए भी धर्म के प्रति अपना श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगे एवं अन्य धार्मिक कृत्यों का आचरण भी करेंगे। साथ ही आप समाज के सभी वर्गो में सम्माननीय रहेंगे एवं दूर दूर तक आप की ख्याति भी रहेगी। आप अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। काम भावना की आप में अधिकता रहेगी

तथा यदा कदा इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। समाज में सभी लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा तथा घृणा एवं द्वेष आप किसी से भी नहीं रखेंगे। लेकिन कभी कभी आप निर्लज्जता का भी प्रदर्शन करेंगे। आप की रूचि अपने से अधिक आयु वाले लोगों से मित्रता करने की रहेगी तथा उन्हीं से आप विशेष मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रखेंगे। आप की रूचि लेखन कार्य में भी रहेगी। अतः काव्य सृजन के क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित कर सकते हैं। आप में पूर्ण उत्साह की भावना भी दृष्टिगोचर होगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पुत्र एवं स्त्री सहित परिवार के पालन में अधिकांश रूप से व्यस्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। साथ ही आप में आलस्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः आपके सांसारिक कार्य धीरे धीरे ही सम्पन्न होंगे परन्तु भाग्य आपका अत्यन्त ही प्रबल रहेगा। अतः भाग्यबल से कई कार्य अल्प परिश्रम से ही सिद्ध हो जाएंगे। आप घूमने फिरने तथा यात्रा आदि करने के लिए भी उत्सुक रहेंगे अतः आपका अधिकांश समय इसी पर व्यतीत होगा। आपका शारीरिक बल भी मध्यम ही रहेगा परन्तु आपकी प्रवृति साहसी होगी एवं वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। अतः कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने के प्रति आपके मन में सदैव उत्साह बना रहेगा। कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। इससे अन्य लोगों में आपके प्रति रोष की भावना उत्पन्न होगी। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी आप पीड़ित रहेंगे तथा समय समय पर इनसे व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। साथ ही आप सर्वप्रकार के सत्वगुणों से सुशोभित रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

पारिवारिक जनों के मध्य आप सामान्य सम्मान तथा आदर ही प्राप्त कर सकेंगे परन्तु कुल या परिवार की परम्परा एवं मर्यादा का आप नित्य पालन करते रहेंगे एवं उसकी वृद्धि में नित्य अपना सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके स्त्री पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा सभी सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप को विविध प्रकार के शास्त्रों का भी विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आप ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे। माता के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा तथा उनसे आपको पूर्ण स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप पुत्रादि संततियों

से भी सम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में इनका पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। भाइयों से आप विशेष सम्मानित होंगे तथा सभी आपका हार्दिक आदर करेंगे। इसके साथ ही आप अतुल धन वैभव के स्वामी भी बनेंगे। आपके मन में त्याग की भावना भी रहेगी तथा अवसरानुकूल अन्य पारिवारिक तथा सामाजिक जनों के मध्य आप इसका यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप का परिवार विशाल होगा तथा सदैव सुख की चिन्ता में आप चिन्तित रहेंगे साथ ही उसकी प्राप्ति के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की सम्पति को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। अन्य जनों के कल्याण या भलाई के लिए भी आप नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उनकी भलाई करने एवं समस्याओं आदि का समाधान करने के लिए अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप सलाह या मंत्रणा देने आदि के कार्यों में सफल तथा निपुण रहेंगे एवं सभी लोग आपकी इस प्रवृति से लाभान्वित होंगे। बन्धु वर्ग के आप पूर्ण पालन कर्ता रहेंगे तथा उनका सुख दुःख में पूर्ण सहयोग करेंगे। इसके साथ ही शौर्य गुणों से भी आप युक्त रहेंगे एवं साहस पूर्वक अपना सांसारिक जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गान विद्या में पूर्ण रूचि होने के कारण आप इसका विस्तृत ज्ञानार्जन करके इसमें विशेष सफलता अर्जित करेंगे तथा इससे आपको पूर्ण प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी एवं इससे आपका स्वरूप आकर्षक रहेगा इसके अतिरिक्त कामभावना की आप में प्रायः प्रबलता ही रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति अधिक बोलने की रहेगी तथा मन में दया एवं करूणा की भावना भी अल्प रूप में ही विद्यमान रहेगी। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा कभी कभी अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप में शारीरिक बल की भी

प्रबलता रहेगी एवं अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद आदि भी समय समय पर होते रहेंगे।

जीवन में आप उन्माद या प्रमेह आदि रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपका शारीरिक आकर्षण मध्यम होगा तथा यदा कदा अल्प मात्रा में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे अतः श्रोता गण आपसे अप्रसन्न से रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कृें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी एवं निष्ठापूर्वक आप इसका अपने जीवन में अनुपालन करेंगे। आपके सभी कार्य अच्छे होंगे एवं अन्य लोगों को भी उससे सन्तुष्टि तथा लाभ की प्राप्ति होगी। आप हमेशा सद्गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे। अतः समाज में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। परिवार की समृद्धि के लिए आप चिन्तनशील रहेंगे तथा उसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील एवं परिश्रम करते रहेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ

ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में सर्वथा वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों की सफलता में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल या चर्मपादुकाएं आदि का भी किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपकी समस्त चिन्ताएं दूर होंगी एवं शारीरिक व्याकुलता से भी मुक्ति मिलेगी। साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त शनि के

तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com